

भा.कृ.अनु.प.-भारतीय सोयाबीन अनुसन्धान संस्थान,
खण्डवा रोड, इंदौर-452001

फाइल क्रमांक: प्रेस एवं पब्लिसिटी/प्रेस नोट/ 2021/3

दिनांक : 13.03.2021

दिनांक 12 एवं 13 मार्च 2021 को भारतीय सोयाबीन अनुसन्धान संस्थान इंदौर द्वारा संस्थान में आयोजित "अखिल भारतीय समन्वित सोयाबीन अनुसन्धान परियोजना की 51वीं वार्षिक बैठक की कार्यवाही बाबत प्रेस विज्ञप्ति



भा.कृ.अनु.प.-भारतीय सोयाबीन अनुसन्धान संस्थान द्वारा दिनांक 12 एवं 13 मार्च 2021 को वर्चुअल-ऑन लाइन माध्यम से जूम एप्प पर वार्षिक समूह बैठक कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें देश के विभिन्न क्षेत्रों/राज्यों समेत सम्पूर्ण देश के लिए अखिल भारतीय समन्वित सोयाबीन अनुसन्धान परियोजना के अंतर्गत कार्यरत केन्द्रों के लगभग 150 वैज्ञानिकों ने भाग लिया। इसके उद्घाटन समारोह के अवसर पर भारतीय कृषि अनुसन्धान परिषद् के उपमहानिदेशक (फसल विज्ञान), डॉ. टी आर शर्मा, सहायक महानिदेशक (तिलहन एवं दलहन) डॉ. संजीव गुप्ता, सहायक महानिदेशक (बीज) डॉ. डी.के.यादव, सोयाबीन फसल पर अनुसन्धान कार्यक्रमों से जुड़े हुए शीर्षस्थ विशेषज्ञ जैसे डॉ. सत्य प्रकाश तिवारी (भूतपूर्व कुलपति, स्वामी केशवानंद कृषि एवं तकनीकी विश्वविद्यालय, बीकानेर), डॉ. हंचिनल (पूर्व अध्यक्ष, प्लांट प्रोटेक्शन वैरायटी एवं फार्मर्स राईट एक्ट) तथा संस्थान के कार्यवाह निदेशक डॉ. नीता खांडेकर समेत विभागाध्यक्ष डॉ. एस.डी.बिल्लोरे, डॉ. संजय गुप्ता, डॉ. एम् पी शर्मा के साथ-साथ सभी वैज्ञानिकों ने भाग लिया।

कार्यशाला के प्रारंभ में अपने स्वागत भाषण में डॉ. नीता खांडेकर द्वारा सोयाबीन की फसल में देश भर में अखिल भारतीय समेकित सोयाबीन अनुसन्धान परियोजना के अंतर्गत वर्ष 2020 में किये गए अनुसन्धान/तकनीकी कार्यक्रमों पर उपलब्धियों की संक्षिप्त रिपोर्ट प्रस्तुत की गई। उन्होंने देश के खाद्य तेल उत्पादन में आत्मनिर्भरता लाने हेतु पंजाब, हरियाणा जैसे अपारंपरिक क्षेत्रों में सोयाबीन की खेती किये जाने एवं सोयाबीन फसल को अंतर्वर्तित फसल के रूप में प्रोत्साहन देने की बात कही। इसके लिए बीज की आवश्यकता पूर्ति हेतु रबी/जायद के मौसम में बीज उत्पादन हेतु सोयाबीन की खेती किये जाने का भी उन्होंने सुझाव दिया।

इसके पश्चात परिषद् के उपमहानिदेशक डॉ. टी आर शर्मा, ने सोयाबीन प्रजातियों की विविधता को बढ़ावा देने तथा अधिक से अधिक जलवायु-उपयुक्त, अधिक उत्पादन क्षमता वाली किस्मों का कृषको में प्रचार-प्रसार करने पर जोर दिया. उन्होंने यह भी कहा की जैव तकनीकी पर आधारित (मार्कर असिस्टेड सिलेक्शन-जिनोम वाइड एसोसिएशन स्टडीज) तरीकों का उपयोग करते हुए स्पीड ब्रीडिंग की सहायता से कमसे-कम समय में सोयाबीन किस्मों के विकास की प्रक्रिया की गति बधाई जा सकती हैं. साथ ही परिषद् के सहायक महानिदेशक (तिलहन एवं दलहन) डॉ. संजीव गुप्ता द्वारा जानकारी दी गयी की अन्य फसलों की तुलना में सोयाबीन का बीज स्थानापन्न दर अपेक्षाकृत कम है, जिसके लिए स्थान विशेष उपयुक्त नई प्रजातियों का प्रचार-प्रसार किया जाना चाहिए.

सोयाबीन प्रजनन विकास कार्यों पर आयोजित तकनीकी सत्र के अध्यक्ष डॉ एस.पी.तिवारी (भूतपूर्व कुलपति, कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर तथा पूर्व उपमहानिदेशक, शिक्षा एवं फसल विज्ञान, भारतीय कृषि अनुसन्धान परिषद्, नई दिल्ली) ने सोयाबीन फसल में भारतीय सोयाबीन अनुसन्धान संस्थान द्वारा विकसित खाद्य गुणों के लिए उपयुक्त किस्मों का विकास, जननद्रव्य संग्रहण एवं मूल्यांकन तथा सोयाबीन पर राष्ट्रीय संकरण कार्यक्रम के अंतर्गत उपलब्धियों पर संतोष प्रकट किया .



डॉ. हंचिनल (पूर्व अध्यक्ष, प्लांट प्रोटेक्शन वैरायटी एवं फार्मर्स राईट एक्ट) ने यह बताया की वर्तमान में सोयाबीन फसल की उत्पादकता में आयी स्थिरता को तोड़ने के लिए भाभा आणविक अनुसंधान केंद्र की सहायता लेकर उत्परिवर्तन प्रजनन (म्यूटेशन ब्रीडिंग) से उत्पादकता बढ़ाने के लिए कार्यक्रम अपनाये जाने चाहिए.

तत्पश्चात आयोजित तकनीकी सत्रों के पूर्व भारतीय सोयाबीन अनुसन्धान संस्थान के डॉ. संजय गुप्ता (अध्यक्ष, फसल सुधर विभाग) द्वारा वर्ष 2020 के दौरान संस्थान तथा देश के विभिन्न राज्यों में कार्यरत अखिल भारतीय सोयाबीन अनुसन्धान परियोजना के केन्द्रों पर किये गए परीक्षणों की संक्षिप्त रिपोर्ट प्रस्तुत की जिसका अनुमोदन प्रदान किया गया.

विभिन्न तकनीकी सत्रों के माध्यम से की गई अनुशंसा का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार हैं. 1. सोयाबीन की किस्मों के विकास में जैविक कारको (रोग/कीट) के लिए प्रतिरोधकता बढ़ाने हेतु जंगली सोयाबीन (ग्लायसिन सोजा) का उपयोग बढ़ाये . 2 . सोयाबीन की नई किस्मों कीट प्रतिरोधिता में वृद्धि हेतु भौतिक

कारकों का उपयोग करना. 3. औसत उत्पादन में वृद्धि हेतु सोयाबीन बोवनी हेतु कतारों की दूरी (45 सेमी) एवं पौधों की दूरी 10 सेमी. का अनुपालन. 4. पोषक तत्वों की पूर्ति हेतु बेसिलस पोलिमिक्सा एवं सूक्ष्मकवक का उपयोग करने से अनुशंसित मात्रा में 25% तक पोषक तत्वों में कमी लाई जा सकती है. 5. आम जनता में सोयाबीन के खाद्य उपयोग बढ़ाने हेतु किये जा रहे अनुसंधान कार्य में सोया-खाद्य पदार्थों के लिए मानक सूचकांक बनाने चाहिए.

इस वार्षिक बैठक के अवसर पर सोयाबीन किस्मों की पहचान हेतु आहूत की गई समिति की बैठक में देश के विभिन्न क्षेत्रों के लिए जलवायु अनुकूल कुल 7 नई सोयाबीन की किस्मों की पहचान किये जाने की अनुशंसा की गई जिनमे से मध्य क्षेत्र के लिए 4 किस्मों की अनुसंशा है: आर.वी.एस.एम. 2011-35 (औसत उत्पादन क्षमता - 2200 किग्रा./हे., तथा ताना मक्खी, चक्र भृंग एवं पर्णबक्षी कीट प्रतिरोधी), एन आर सी 142 (खाद्य गुणों के लिए उपयुक्त, लिपोक्सीजिनेज-2 तथा केटीआई मुक्त देश की प्रथम सोयाबीन प्रजाति), एन आर सी 138 (शीघ्र पकने वाली- औसत 95 दिन एवं औसत उत्पादन क्षमता 1789 किग्रा/हे); एएमएस 100-39 (औसत उत्पादन-2087 किग्रा/हे). इसी प्रकार तथा दक्षिण क्षेत्र के लिए बड़े दाने वाली किस्म केडीएस-992 (औसत उत्पादन क्षमता-2658 किग्रा/हे), एमएसीएसएनआरसी-1667 (औसत उत्पादन क्षमता - 2051 किग्रा/हे केटीआई मुक्त सोयाबीन किस्म), करुणे (हरी फलियों के रूप में खाने योग्य देश की प्रथम वेजिटेबल सोयाबीन), एन आर सी 142.

संस्थान की निदेशक डॉ नीता खांडेकर द्वारा ज्ञापित धन्यवाद प्रस्ताव के साथ वार्षिक समूह बैठक का समापन हुआ.

.....